वर्चस्ववादी पुरुषत्व के निर्माण में पाठ्यपुस्तकों की भूमिका

मधु कुशवाहा

शिक्षण की प्रक्रियाओं में पाठ्यपुस्तकों ने एक महत्त्वपूर्ण मुकाम हासिल कर लिया है। पाठ्यपुस्तकों के अभाव में औपचारिक शिक्षा को लगभग नामुमकिन माना जाने लगा है। पिछले पन्द्रह-बीस सालों में पाठ्यपुस्तकों की गहराई से छानबीन की जाने लगी है कि दरअसल इन पाठ्यपुस्तकों के जरिए किस प्रकार का 'ज्ञान' दिया जा रहा है? पाठ्यपुस्तकों में किसके ज्ञान का प्रतिनिधित्व है? विभिन्न वर्गों और समूहों का प्रतिनिधित्व किस रूप में किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध लेख जेण्डर के नजरिए से पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करता है।

भावी पीढ़ी को शिक्षित करने की एक संस्था के रूप में विद्यालयों का निर्माण आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। वर्तमान में स्कूल 'ज्ञान' के वैधीकरण और इसको प्रसारित करने की एकमात्र संस्था बन गया है। आज 'सबके के लिए शिक्षा' के अंतर्गत ज्यादा से ज्यादा बच्चों को स्कूल में नामांकित करने पर विशेष बल है। इसका तात्पर्य यह है कि बहुत सारे बच्चे अपने आरम्भिक महत्त्वपूर्ण वर्ष स्कूलों में बिताएंगे। प्रत्येक शिक्षा व्यवस्था का एक सामाजिक सन्दर्भ होता है और पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था व विचारधारा शिक्षा व्यवस्था को गहरे रूप से प्रभावित करती हैं। स्कूल लैंगिक पहचान के निर्माण के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान है। विद्यालय में ज्ञान, कौशलों और अन्य योग्यताओं के सीखने के साथ-साथ बच्चे पुरुषत्व, नारीत्व एवं यौनिकता के बारे में भी सीखते हैं। स्कूली जीवन के अनुभव (पाठ्यक्रम और विषय चुनाव, शिक्षण विधि, शिक्षण सामग्री एवं स्कूल की संस्कृति) इस रूप में व्यवस्थित किए जाते हैं कि उनका समाज के व्यापक जेंडर मानकों से विरोध न होकर अनुरूपता रहती है।

चूंकि आधुनिक राष्ट्र-राज्य के लिए औपचारिक शिक्षा अब नागरिकता और राष्ट्रीयता के विचारों पर नियंत्रण करने के क्रम में महत्त्वपूर्ण बन गया है। अतः शिक्षा तंत्र राज्य की विचारधाराओं से अलग नहीं रह सकता। आधुनिक राज्य स्वयं को 'राष्ट्र-राज्य' बुलाना पसन्द करते हैं और अपने नागरिकों में राष्ट्रीय विचारों को उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं। राष्ट्रीयता राष्ट्र एवं इसके लोगों के बारे में एक विचारधारा है और यह वास्तविक राज्य के अस्तित्व में आने से पहले से विकसित की जाती है। राष्ट्रवाद एक 'हम' की भावना है जिसकी लगातार व्याख्या की आवश्यकता रहती है। राष्ट्रवादी विचारधारा का निर्माण एक बार में संपन्न

हो जाने वाला काम नहीं है बल्कि इसके लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। इसीलिए राष्ट्रवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने हेतु औपचारिक शिक्षा व्यवस्था राज्यों की पसंदीदा संस्था है।

पुरुषत्व एवं राष्ट्रवाद के बीच संबंध

परन्तु समस्या यह है कि ज्यादातर राष्ट्रवादी विचारधाराओं की जड़ें पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में हैं और राष्ट्रवाद स्वयं एक पुरुषवादी परियोजना है जिस प्रकार पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्रियों की रक्षा की (अन्य पुरुषों से) जिम्मेदारी पुरुषों पर रहती है क्योंकि वे उनके स्वामी समझे जाते हैं और साथ स्त्रियां पुरुष के सम्मान की वाहक, ठीक उसी प्रकार अधिकांश राष्ट्रवादी विमर्शों में राष्ट्र की कल्पना स्त्री के रूप में की गई है और राष्ट्र की रक्षा और प्रकारांतर से नियंत्रण की जिम्मेदारी पुरुषों ने स्वयं को दी है। इसीलिए पितृसत्तात्मक और राष्ट्रवादी दोनों विमर्शों में स्त्रियों के आचरण पर विशेष नजर (नियंत्रण) रखी जाती है। वर्चस्ववादी राष्ट्रवाद मुख्यतः साझे अतीत, साझे दुःख व साझी शौर्य गाथाओं का लैंगिक आख्यान है। राष्ट्रवादी परियोजना में पुरुष और स्त्री की स्पष्ट भूमिकाएं पूर्वनिर्धारित रहती हैं। इसके अंतर्गत राष्ट्र की संकल्पना एक स्त्री के रूप की जाती है तथा राष्ट्र व स्त्री दोनों को अन्य पुरुष (दुश्मन) से संरक्षण की आवश्यकता है। इसके अलावा औरतों को 'राष्ट्रीय सम्मान' की वाहक के रूप में और पुरुषों को राष्ट्र एवं राष्ट्रीय सम्मान के स्वामी एवं संरक्षक के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। वर्चस्ववादी राष्ट्रीयता की विचारधारा वर्चस्ववादी पुरुषत्व के बिना पूर्ण नहीं होती है, क्योंकि जहां पहले का संबंध मातृभूमि की रक्षा से है वहीं दूसरे का संबंध अपनी औरतों की रक्षा से है। रक्षक पुरुष और रक्षिता स्त्री की विचारधारा का फैलाव निजी से लेकर सार्वजनिक जीवन तक है और यह पुरुषत्व और नारीत्व के निर्माण हेतु बहुत प्रभावी मॉडल है। अर्थात् निजी जीवन में 'पुरुषोचित' व्यवहार अपनी स्त्रियों का रक्षक होना है वहीं सार्वजनिक जीवन में पुरुषों से अपेक्षा है कि वे अपने राष्ट्र (स्त्री के रूप में कल्पित) की रक्षा शत्रुओं से करें। अतः 'स्त्री' वास्तविक और प्रतीकात्मक दोनों रूपों में एक कमतर श्रेणी है जिसे हमेशा शत्रु से बचाए जाने के लिए पुरुष की जरूरत है। शत्रु से रक्षा के विचार में संघर्ष एवं हिंसा का विचार आवश्यक रूप से शामिल है। इसलिए राष्ट्रवाद का सैन्यवादी पुरुषत्व से निकट का संबंध है। जैसा कि नागेल (1998) कहती हैं, ''पुरुषत्व की रोजमर्रा की आवश्यकताएं अर्थात् इसकी 'सूक्ष्म-संस्कृति' राष्ट्रवादी अवश्यकताओं खासकर सैन्यवादी पक्ष से बहुत अच्छे से मेल खाती हैं। बहुत सारे शब्द जैसे सम्मान, देशभक्ति, कायरता, बहादुरी और कर्तव्य को अलग-अलग कर पाना मुश्किल है कि क्या ये राष्ट्रवादी हैं अथवा पुरुषवादी''।

राष्ट्रवादी उद्देश्यों को पूरा करने हेतु राज्य व समाज द्वारा लड़कों को 'पुरुषों' के रूप में तैयार किया जाता है। शिक्षा या स्कूलिंग पुरुषत्व के निर्माण में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्कूलिंग एक जटिल प्रक्रिया है और पाठ्यपुस्तक स्कूली जीवन का सबसे वास्तविक और ठोस पहलू है। चूंकि पाठ्यपुस्तकें साझा-संस्कृतिक मूल्यों, अर्थों, प्रत्याशाओं की एक प्रभावी रूपरेखा है, अतः इनके द्वारा बच्चे यह समझ बनाते हैं कि एक स्त्री या पुरुष होने के नाते उनसे क्या उम्मीदें या आशाएं की जा रही हैं और इस समाज में उनकी क्या जगह है। पाठ्यपुस्तकें राष्ट्रवादी एवं पुरुषवादी सोच को ठोस रूप में प्रस्तुत करती हैं और 'राज्य' एवं 'भावी पीढ़ी' के मध्य अंतर्क्रिया के लिए जगह प्रदान करती है। अतः पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन इन विमर्शों को समझने का अवसर प्रदान करता है। भारतीय सामाजिक संदर्भ में पुरुषत्व के निर्माण में पाठ्यपुस्तकों की भूमिका का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।

अध्ययन का तरीका

मौजूदा शोध-अध्ययन में कक्षा छः की पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु का विश्लेषण सामाजिक संरचनावादी फ्रेमवर्क में किया गया। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को जानने के लिए तीन विद्यार्थियों (2 छात्र, 1 छात्रा) का साक्षात्कार लिया गया। पाठ्यपुस्तकों के तीन सेट का चुनाव किया गयाः

सेट-1ः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पर आधारित एन.सी.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकें।

सेट-2: पूर्ववर्ती पाठ्यक्रम संरचना- 2000 पर आधारित एन.सी.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकें जो कि वर्तमान में प्रयोग नहीं की जा रही हैं।

सेट-3: माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश की वर्तमान में प्रयुक्त पाठ्यपुस्तकें।

परिणाम

विषय-वस्तु विश्लेषण से निम्नलिखित मुख्य प्रसंग उभर कर सामने आए:

युद्ध

यद्यपि हम 21वीं सदी में रहते हैं लेकिन पाठ्यपुस्तकें विशेषकर हिन्दी और नैतिक शिक्षा की किताबों में युद्ध और युद्ध नायकों के प्रति विशेष आकर्षण प्रदर्शित है। सेट-2, हिन्दी की किताब के एक चौथाई अध्याय और सेट-3, नैतिक शिक्षा के 31 में से 12 अध्याय युद्ध केन्द्रित हैं। भगवान और राक्षस के बीच, देसी राजाओं एवं मुस्लिम आक्रांताओं के बीच, राजाओं के आपसी युद्ध और अंग्रेजों के खिलाफ आजादी के लिए आक्रामक संघर्ष के विवरणों की भरमार थी। किताबों में वास्तविक, पौराणिक व प्रतीकात्मक दुश्मनों से युद्ध के अनगिनत संदर्भ थे। युद्धकालीन परिस्थितियों में ही पुरुषोचित आदर्शों को ऊंचाई प्रदान की जा सकती है। इसलिए युद्ध नायकों का महिमामंडन किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि ये कहानियां युवा विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करेंगी।

आक्रामक राष्ट्रीयता

सेट-2, हिन्दी की किताब सबसे प्रबल एवं स्पष्ट रूप से आक्रामक राष्ट्रीयता का विवरण प्रस्तुत करती है। 22 में से 6 अध्याय सीधे तौर पर आक्रामक राष्ट्रीयता के संदेशों से भरे हुए थे और संपूर्ण पुस्तक में पुरुषवादी स्वर स्पष्ट रूप से दिखता है। सभी अध्याय पुरुष पात्र केन्द्रित थे। केवल एक कविता रानी लक्ष्मी बाई पर थी जो बहादुरी एवं बलिदान के 'पुरुषोचित' गुणों के प्रदर्शन हेतु जानी जाती हैं। सेट-2 हिन्दी, अध्याय 2, 'बैसाखी फिर आ गई' में पंच प्यारे के बलिदान एवं गुरु गोविंद सिंह द्वारा पांच सिर की मांग का वर्णन है,

आंखों से चिंगारियां बिखेरता, नंगी चमचमाती तलवार घुमाता हुआ तैंतीस वर्षीय युवा व्यक्ति कह रहा था मुझे सिर चाहिए...''मैं अपना सिर देने को तैयार हूं''...''खटाक''...

''और खेमे से खून की धार बह निकलती है''

''चौथी मांग के साथ तलवार पर खून की परत और गहरी हो गई... एक और सिर चाहिए''

पाठ की भाषा, कथानक और वर्णन शैली बलिदान, खून-खराबे को इस उत्साह से प्रदर्शित करती है कि यह एक 'हिंसा के उत्सव' की तरह दिखाई देने लगता है। देशभक्ति के कथानक पर आधारित कविताएं पुरुषों का आह्वान करती हैं कि वे दुश्मनों से देश की रक्षा करें तथा राष्ट्र के रक्षक बनें। सेट-३, हिन्दी की एक कविता एक ऐसे पुरुष की इच्छा पर केन्द्रित है जो भारत माता के चरणों में अपना शीश अर्पित करना चाहता है। इसी पुस्तक की एक अन्य कविता 'खूनी हस्ताक्षर' जो सुभाष चन्द्र बोस को समर्पित है, बहादुर पुरुषों का आह्वान करती है:

''आजादी का इतिहास कहीं काली स्याही लिख पाती है? इसके लिखने के लिए खून की नदी बहाई जाती है... सारी जनता हुंकार उठी- हम आते हैं, हम आते हैं। माता के चरणों में यह लो हम अपना रक्त चढ़ाते हैं...''

आक्रामक राष्ट्रवाद में महिलाओं का योगदान:

सेट-3 और सेट-2 की हिन्दी की पुस्तक में एक सामान्य पाठ रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन में उनके मां की भूमिका के बारे में है, यह बिस्मिल की आत्मकथा से उद्धरित अंश है। इस पाठ का केन्द्रीय बिंदु राष्ट्रवादी परियोजना में 'मां' के रूप में महिलाओं का योगदान है:

''मां मुझे विश्वास है, तुम यह समझ कर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता भारत माता की सेवा में अपने जीवन को बलिवेदी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारे कुल को कलंकित न किया, अपनी प्रतिज्ञा में दृढ़ रहा''।

सेट-3 हिन्दी के दूसरे पाठ 'अमर शहीद भगत सिंह के पत्र' में भी औरत का 'मां' के रूप में योगदान मुख्य बिंदु था।

''...लेकिन दिलेराना ढंग से मेरे फांसी चढ़ने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएं अपने बच्चों को भगत सिंह बनने की आरजू किया करेंगी।''

ऊपरी तौर पर ऐसा दिखाई देता है कि राष्ट्रवादी परियोजना में से महिलाएं गायब हैं और यह पुरुषों का, पुरुषों द्वारा व पुरुषों के लिए खेल है, लेकिन कथानक में महिलाओं को भी 'मां' के रूप में कुछ भूमिकाएं दी गई हैं। इस किस्म के पाठ लड़कों और लड़कियों को बहुत ही स्पष्ट संदेश देते हैं कि उनसे क्या राष्ट्रवादी अपेक्षाएं की जा रही हैं। राष्ट्र पुरुषों का है; वे इसके मालिक एवं रक्षक हैं। महिलाओं को राष्ट्र में अलग-अलग किस्म की सहायक भूमिकाओं में संयोजित किया जाता है जैसे, कभी प्रतीकात्मक भारत माता के रूप में तो कभी वास्तविक (वीर पुत्रों की) माताओं के रूप में।

देशभक्ति

व्यक्तिगत स्तर पर 'पुरुषत्व' का संबंध अपनी औरतों और परिवार की रक्षा से है जबकि सार्वजनिक जीवन में 'पुरुषत्व' का तात्पर्य अपने जाति, समुदाय, देश की रक्षा करने की योग्यता है। इसीलिए वांछनीय पुरुषोचित गुणों की सूची में 'देशभक्ति' एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण गुण है। विद्यार्थियों के लिए आदर्श के रूप में पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित ज्यादातर पुरुष महान् देशभक्त थे। पाठ्यपुस्तक में अधिकांशतः युद्ध या संघर्ष की पृष्ठभूमि में ही देशभक्ति का चित्रण किया गया है, जैसे, मुस्लिम आक्रमणकारियों व अंग्रेजों के खिलाफ आजादी का संघर्ष। कुछ वैज्ञानिकों, उद्योगपतियों और राजनैतिक नेताओं (सभी पुरुष) को भी देशभक्त के रूप में प्रदर्शित किया गया है तथा राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को रेखांकित किया गया है।

पाठ्यपुस्तकों में समान्यतः मुस्लिम पुरुष और पुरुषत्व का प्रतिनिधित्व तुलनात्मक रूप से कम है और अधिकांशतः उनका प्रस्तुतिकरण वर्चस्ववादी राष्ट्रवादी विमर्श के दायरे में किया गया है। पाठ्यपुस्तकों में जब मुस्लिम आक्रमणकारियों के रूप में नहीं प्रस्तुत हैं तब उन्हें भारतीय परंपरा पर गर्व रखने वाले 'देशभक्त' के रूप में प्रदर्शित किया है।

यह एक महत्त्वपूर्ण सवाल है कि आधुनिक राष्ट्र-राज्यों हेतु 'देशभक्ति' क्यों एक सर्वाधिक वांछनीय 'पुरुषोचित' गुण है? राष्ट्रवादी विचारधारा विशेषकर सैन्यवादी राष्ट्रीयता का विमर्श तब तक अपूर्ण है जब तक कुछ पुरुष राष्ट्रीय गर्व एवं सम्मान की रक्षा के लिए अपनी निजी जिन्दगी कुर्बान करने को तैयार न हों। पुरुषत्व एवं राष्ट्रीयता में संबंध है जैसा कि सिंथिया एनलो (1990) कहती हैं, ''राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रकटीकरण पुरुषवादी स्मृतियों, पुरुषवादी अवमानना और पुरुषवादी आशा में होता है।

राष्ट्रवाद किसी पुरुष के व्यक्तिगत 'सम्मान-बोध' व गर्व का राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार है। पुरुषत्व की विचारधारा के अनुसार महिलाएं पुरुषों, जाति, एवं राष्ट्र की संपत्ति मानी जाती हैं। यदि पुरुष किसी स्त्री की बेइज्जती करते हैं तो वास्तव में वे उस पुरुष का बेइज्जती करते हैं, जिससे वह महिला संबंधित है। पुरुष सम्मान एवं गर्व के धारक हैं और औरत का दायित्व इस सम्मान को अक्षुण्ण रखना है और ऐसा कोई भी आचरण नहीं करना है जिससे पुरुष/राष्ट्र की इज्जत खतरे में पड़ती हो।

देशभक्तिवाद देश पर कुछ पुरुषों के नियंत्रण को वैध बना देता है। देशभक्तिवाद पुरुषत्व के आक्रामक, हिंसक पक्ष और युद्ध लिप्सा को ढककर उन्हें नैतिकता का जामा पहना देता है। यह पुरुषों को सम्मान प्राप्ति में मदद करता है।

संघर्षात्मक स्थिति में देशभक्त एक नायक के रूप प्रस्तुत होता है और अधिकांश संघर्ष की स्थिति में 'शत्रु' (वास्तविक अथवा काल्पनिक) का होना अनिवार्य है। अतः बहादुरी का कोई भी आख्यान तब तक अधूरा है जब तक कि नायक शत्रु से न लड़े। सेट-2 और सेट-3 की पाठ्यपुस्तकों में स्थान प्राप्त ज्यादातर नायक जैसे गुरुगोविन्द सिंह, मंगल पाण्डेय, भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, यतीन्द्र नाथ मुखर्जी, राम प्रसाद बिस्मिल, कुंवर सिंह, रानी लक्ष्मी बाई सभी सैन्यवादी पुरुषवादी राष्ट्रवादी विचारधारा से संबंधित हैं।

राष्ट्र का जेंडर्ड विवरण

राष्ट्रीयता और पुरुषत्व दोनों ही विचार हैं। भारतीय राष्ट्रीयता का संपूर्ण विचार ही जेंडर्ड है जिसके तहत राष्ट्र की संकल्पना एक महिला के रूप में और पुरुष को इसके रक्षक के रूप में परिभाषित किया गया है। बंकिम चन्द्र चटर्जी के 'आनन्द मठ' में राष्ट्रीय भूमि को भारत माता के प्रतीकात्मक रूप में गढ़ा गया जो अंग्रेजों द्वारा जंजीरों में जकड़ी व पददलित है तथा उसके खोए हुए सम्मान व आजादी की प्राप्ति के लिए सभी पुरुषों का आह्वान किया गया। यह आह्वान पुरुषत्व के सांस्कृतिक मॉडल के अनुरूप ही है।

पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण यह प्रदर्शित करता है कि राष्ट्र को हमेशा एक महिला 'भारत माता' के रूप प्रदर्शित किया गया है। पहले की किताबों में भारतीय नक्शे की पृष्ठभूमि में भारत देश को प्रदर्शित करती एक महिला छवि और बन्दूक के साथ पुरुष सैनिक रक्षक के रूप में होता था। हालांकि वर्तमान अध्ययन में किसी भी पुस्तक में यह तस्वीर तो नहीं थी लेकिन विचार एवं विषयवस्तु के स्तर पर यह लैंगिक संदेश अभी भी बदला नहीं है और बार-बार और दोहराया गया था।

अतः पाठ्यपुस्तकों में राष्ट्र एवं स्त्रीत्व के मध्य संबंध को बहुत ही विशेष तरीके से दिखाया गया था, जिसमें राष्ट्र की इज्जत स्त्री की इज्जत है और स्त्री का अपमान राष्ट्र का अपमान बन जाता था। अतः वर्चस्ववादी राष्ट्रवाद एवं वर्चस्ववादी पुरुषत्व की एक समान विचारधारा है तथा दोनों एक-दूसरे को मजबूती प्रदान करते हैं।

सकारात्मक पुरुषत्व

ज्यादातर समय पुरुष और वर्चस्ववादी पुरुषत्व को राष्ट्रवादी देशभक्ति व युद्ध की स्थिति की पृष्ठभूमि में दिखाया गया था। लेकिन जब पुरुषों को उपरोक्त स्थितियों में नहीं दिखाया जाता तब भी 'बहादुरी' पुरुषत्व का मुख्य गुण था। लगभग सभी पुरुष पात्रों का चरित्र-चित्रण बहुत सकारात्मक तरीके से किया गया था। पाठ्यपुस्तकों में प्रदर्शित लगभग सभी राजा बहादुर, शत्रुओं के प्रति क्रूर, निष्ठुर तथा अपने प्रजा के प्रति दयालु के रूप में चित्रित किए गए हैं।

बहादुरी, भलाई, दयालुता, साहस, तार्किकता कुछ ऐसे गुण हैं जो लगभग सभी पुरुष पात्रों से जुड़े हुए थे। पुरुष पात्रों को कभी भी किसी किस्म की दुविधा, कमजोरी के साथ नहीं दिखाया गया था बल्कि पुरुषों में नैतिक और शारीरिक कमजोरी के प्रति तिरस्कार व्यक्त किया गया था। पुरुषों में कायरता निंदनीय थी और उस पुरुष को तिरस्कृत किया गया था, जिसने कायरता का प्रदर्शन किया हो। सेट-3 की हिन्दी की किताब में एक कविता है 'खग उड़ते रहना जीवन भर' जिसमें एक चिड़िया के रूपक के द्वारा यह दिखाया गया है कि कायरता दिखाने से अच्छा मर जाना है क्योंकि संघर्ष करते हुए मरने से पुरुष शहीद बनता है, जिसकी इज्जत होती है लेकिन एक कायर पुरुष हंसी का पात्र होता है तथा यह किसी भी पुरुष के लिए सबसे बड़ा अपमान है।

सेट 2 और 3 दोनों की हिन्दी की किताबों के विपरीत अंग्रेजी की किताबों में पुरुषत्व और राष्ट्रवाद, देशभक्ति और आक्रामक राष्ट्रवाद से संबंधित कोई स्पष्ट संदेश नहीं है। सेट-2 की अंग्रेजी सप्लीमेंटरी रीडर की किताब में पंचतंत्र से दो कहानियां- 'मित्र नेवला' और 'बन्दर और मगरमच्छ' ली गई हैं, दोनों ही कहानियां महिला पात्रों का वर्णन अतार्किक, क्रोधी और स्वार्थी व्यक्ति के रूप में करती हैं। देशी अथवा लोक कहानियां तुलनात्मक रूप से ज्यादा लैंगिक

पूर्वाग्रहों के साथ होती हैं, अतः किताबों में जब लोक कहानियों को सम्मिलित किया जाता है तब उनके साथ लैंगिक पूर्वाग्रहों के भी आ जाने का खतरा रहता है।

सेट-2 और 3 की हिन्दी और नैतिक शिक्षा की किताबों में नैतिक आचरण के बहुत ही ऊंचे आदर्श दिए गए हैं और कई बार ऐसा लगता है कि यह किताबें बच्चों के लिए नहीं बल्कि वयस्कों के लिए हैं और यह आश्चर्य कि बात नहीं है क्योंकि भारत में बच्चे राष्ट्रवादी परियोजना के लिए महत्त्वपूर्ण हैं इसलिए बच्चों और वयस्कों के लिए एक ही आदर्श दिए गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, 1966 कहता है; ''भारत का भाग्य अब उसके कक्षाओं में आकार प्राप्त कर रहा है''। उपरोक्त कथन यह दिखाता है कि राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था राष्ट्र निर्माण परियोजना में शिक्षा की भूमिका और उसमें बच्चों के स्थान को किस प्रकार देखता है। यह आसानी से समझा जा सकता है कि राज्य, शिक्षा व्यवस्था के जरिए बच्चों का सामाजीकरण व प्रयोग नागरिकता एवं राष्ट्रीयता संबंधी विमर्श को आगे बढ़ाने के लिए करता है और क्यों बच्चों की किताबों में बलिदान और शहादत के इतने ऊंचे मूल्य रखे जाते हैं।

पुरुषत्व का तात्पर्य साहस और रोमांच भी है। यह देखना बहुत असामान्य है कि सेट-1 की अंग्रेजी की किताब 'हनी सकल' के मुखपृष्ठ के अन्दर वाले पेज पर भारतीय सेना में जाने का एक विज्ञापन दिया गया है। विज्ञापन में असाधारण साहस, रोमांच और गौरव से भरपूर जीवन का वादा है तथा इस विज्ञापन के आधे पृष्ठ पर 'पुरुषोचित' भाव-भंगिमा से युक्त तीन क्रियाशील पुरुष सैनिक व नीचे एक कोने में कम्प्यूटर के सामने बैठी एक युवती की एक छोटी तस्वीर दी गई है।

विषयवस्तु चयन और उसके प्रस्तुतिकरण के तरीके के द्वारा पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों में पुरुषवादी-राष्ट्रवादी भावना का विकास बहुत सक्रिय रूप से करती हैं। कई बार यह कार्य बहुत सुविचारित तरीके से (जैसे सेट-2 और सेट-3 की किताबों में) और कई बार अप्रत्यक्ष रूप में (जैसे सेट-1 की अंग्रेजी पुस्तक में भारतीय सेना का विज्ञापन देकर) किया जाता है।

वर्चस्ववादी पुरुषत्व

किताबों का विश्लेषण यह प्रदर्शित करता है कि सेट-2 और 3 के लगभग सभी पुरुषोचित आदर्श शासक या उच्च वर्गों से लिए गए थे। सेट-1 की किताबें अपवाद हैं क्योंकि इनमें वर्चस्ववादी पुरुषत्व के संदेश न्यूनतम थे, दूसरे ये किताबें विविध लैंगिक और वर्गीय पहचानों के संदर्भ में समावेशी हैं। वहीं सेट-2 और 3 की किताबों में बहुत कम निम्न वर्गीय/जातीय पुरुषों का सही तरीके से प्रस्तुतिकरण किया गया था। उदाहरण के लिए, सेट-2 के हिन्दी की किताब में 'बैसाखी फिर आ गई' पाठ न केवल आक्रामक राष्ट्रीयता के बारे में है बल्कि यह जाति के मुद्दे को निम्न तरीके से संबोधित करती थीः

''मैं अपना सिर देने को तैयार हूं पर...'' ''क्या आप मेरा सिर भी स्वीकार करेंगे? मैं छोटी जाति का हूं...छीपा ... कपड़े छापने वाला''।

''मेरा सिर चाहिए! मैं नाई हूं। ...मैं बाल काटता रहा और छोटा बनता रहा। लोगों ने मेरे सामने सिर झुकाए पर मेरे हाथ का छुआ पानी नहीं पिया। आप तो गुरु हैं ...लीजिए मेरा सिर ...शायद आपकी प्यास थोड़ी सी बुझ जाए।"

उपरोक्त पूरे पाठ में निम्न जाति के पुरुषों के बलिदान पर कोई महत्त्व नहीं दिया गया व पाठ केवल गुरु गोविन्द सिंह पर ही केन्द्रित था। ऐसा प्रतीत होता है कि महिलाओं की ही तरह ही निम्न जाति/वर्गीय पुरुषों का प्रस्तुतिकरण सही ढंग से नहीं किया गया तथा उनके योगदान की उपेक्षा की गई है। अतः कह सकते हैं कि निम्न जाति के लोगों का 'महिलाकरण' किया गया है और उच्च जातीय/वर्गीय पुरुषों के सम्मुख उन्हें कम शक्तिशाली और दयनीय (महिलाओं की भांति) रूप में प्रस्तुत किया गया है। दूसरा उदाहरण सेट-3 में नैतिक शिक्षा की किताब में सम्मिलित एकलव्य की कहानी से है जो एक आदिवासी लड़का है। यह कहानी शिक्षा प्राप्त करने के अवसर पर जातिवादी

आधिपत्य और एक आदिवासी युवक के साथ हुए अन्याय पर कोई सवाल नहीं उठाती बल्कि द्रोणाचार्य को एक महान् शिक्षक और एकलव्य को एक सच्चे समर्पित छात्र के रूप में महिमामंडित कर देती है।

यद्यपि भारत एक बहुलतावादी देश है और इस बात को पुस्तकों में बार-बार रेखांकित भी किया जाता है लेकिन धार्मिक एवं नृजातीय अल्पसंख्यक समूह के पुरुषों का पाठ्यपुस्तकों में बहुत कम प्रतिनिधित्व है। सेट-2 और सेट-3 की किताबों में सामान्य रूप से महिलाओं का बहुत कम प्रतिनिधित्व था। सेट-1 की पुस्तकों में न केवल महिलाओं बल्कि अन्य जातीय समूहों का भी पर्याप्त प्रतिनिधित्व था। तीनों सेट की किसी भी पुस्तक में अधीनस्थ पुरुषत्व संबंधी गुणों कोई जिक्र नहीं था।

विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया

पुस्तकों में दिए गए पुरुषत्व संबंधी संदेशों को बच्चे कैसे ग्रहण करते हैं इस प्रक्रिया को समझने कि लिए कक्षा छः के तीन विद्यार्थियों का अलग-अलग साक्षात्कार लिया। दो छात्र केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों में पढ़ रहे थे और एक यू.पी. बोर्ड से। साक्षात्कार काम आधारित था, विद्यार्थियों को पाठ्य अंशों (अध्ययन में सम्मिलित किताबों में से) को पढ़ने हेतु दिया और इसके बाद पढ़े गए पाठ के बारे में उनके विचार, भावनाओं को जानने हेतु अनौपचारिक बातचीत की गई।

राष्ट्रवादी विचारधारा का विद्यार्थियों पर काफी प्रभाव दिखा। एक लड़के ने कहा कि उसे 'झांसी की रानी' पाठ सबसे ज्यादा पसन्द है। इस प्रश्न के जवाब में कि उसे यह पाठ क्यों पसन्द है, उसका जवाब था क्योंकि उसने देश की आजादी के लिए लड़ाई की थी। वह आगे कहता है कि, ''सभी को देशभक्त होना चाहिए और दुश्मनों से भारत माता की रक्षा करनी चाहिए।'' वह बोला यदि उसे मौका मिला तो वह देश के लिए लड़ेगा। इस प्रश्न के जवाब में कि देश लिए कौन लड़ सकता है? तीनों विद्यार्थियों ने कहा- पुरुष सैनिक। क्या महिला भी देशभक्त हो सकती हैं, तो वे कुछ देर के लिए रुके फिर बोले- 'हां'। प्रश्न, 'कैसे'? तो उनमें से दो विद्यार्थियों ने कहा वे नहीं जानते और तीसरे लड़के ने कहा केवल भारतीय उत्पादों को खरीदकर। साक्षात्कार के अन्त उसी लड़के ने कहा कि महिलाएं युद्ध में घायल सैनिकों की सेवा कर सकती हैं।

दोनों लड़कों ने कहा कि खून-खराबा और लड़ाई-झगड़ा ठीक नहीं है लेकिन बाद में अपनी प्रतिक्रिया को युक्तिसंगत बनाते उन्होंने कहा कि लेकिन अपने देश की रक्षा के लिए यह आवश्यक है। दोनों ही लड़कों ने कहा कि भारतीय सेना एक शांतिप्रिय सेना है, वह कभी युद्ध की शुरुआत नहीं करती केवल देश की रक्षा के लिए लड़ती है और कहा कि, ''लड़ना पड़ता है... अगर कोई हमला करे''।

एक लड़के ने कहा कि सैनिकों का समाज में ज्यादा सम्मान है। क्या आप भारतीय सेना में जाओगे, इस प्रश्न पर उसका जवाब था 'नहीं' और उसने आगे जोड़ा कि, ''ऐसा नहीं है कि मुझे डर लगता है... पर मेरा इंटरेस्ट कुछ और है''। लड़की ने इन प्रश्नों के बहुत ही संक्षिप्त उत्तर दिए और कहा कि सेना देश की रक्षा करती है और यह महत्त्वपूर्ण कार्य है।

इस प्रश्न के जवाब में कि कौनसा पाठ सबसे अच्छा लगा, लड़की का जवाब था 'ईदगाह' और 'नन्हा जादूगर'। दोनों ही कहानियों में मुख्य पात्र छोटे लड़के थे और कहानियों का मुख्य कथानक 'मां की देखभाल एवं उसके लिए त्याग' के नैतिक संदेश पर आधारित था तथा ये कहानियां हिंसा और और युद्ध पर नहीं थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि लड़कों के विपरीत लड़की को देशभक्ति और हिंसा पर आधारित कहनियों की बजाय देखभाल और त्याग पर आधारित कहनियां ज्यादा पसंद आईं।

प्रश्न कि हम भारत को 'भारत माता' क्यों संबोधित करते हैं? इसके जवाब में एक लड़के ने कहा कि, 'किताबों में लिखा है'। सभी विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें 'बैसाखी फिर आ गई' कहानी (सेट 2, हिंदी) बहुत अजीब लगी क्योंकि उन्हें समझ नहीं आया कि वह व्यक्ति सिर क्यों मांग रहा था। स्पष्ट है कि यह पाठ बच्चों के समझ के स्तर से परे था।

सभी विद्यार्थियों ने कहा कि वे राष्ट्रगान का पूरा मतलब नहीं समझते लेकिन वे जानते हैं कि इसे किसने लिखा है। एक लड़के ने कहा कि राष्ट्रगान उसे जोश से भर देता है तथा देशभक्ति गीत और स्वतंत्रता सेनानियों के पाठ उसे प्रेरणा देते हैं। वहीं दूसरे लड़के ने कहा कि उसे ऐसा नहीं लगता।

निष्कर्ष

विद्यार्थियों के साक्षात्कार के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि कक्षा-6 के स्तर पर बच्चे राष्ट्र के जेंडर्ड आख्यान को पूरी तरह स्वीकार कर चुके हैं। राष्ट्रवादी विमर्श में पुरुषों से क्या अपेक्षित है इसका उन्हें बहुत स्पष्ट अंदाज है परन्तु महिलाएं राष्ट्र के लिए क्या कर सकती हैं, इस संबंध में स्पष्ट संदेश उन्हें इस स्तर पर नहीं है हालांकि एक लड़के ने राष्ट्रवादी विमर्श में महिलाओं को सहयोगी भूमिका (नर्स की) प्रदान की। विद्यार्थी किताबों में दिए गए संदेशों के केवल निष्क्रिय प्राप्तकर्ता ही नहीं हैं। वे पढ़ते हैं, व्याख्या करते हैं और संदेश से अर्थ का निर्माण करते हैं। दिए पाठ को पसंद करने या नापसंद करने का अधिकार भी (कर्ता-भाव) उनके पास होता है परन्तु पाठ्यपुस्तकों, अन्य बाल साहित्य, लोकप्रिय संस्कृति और जन संचार माध्यमों में उपस्थित शक्तिशाली राष्ट्रवादी-पुरुषवादी विमर्श द्वारा इस कर्ता भाव को लगातार सीमित किया जाता है। पाठ्यपुस्तकें वर्चस्ववादी-पुरुषत्व (जो आक्रामक है तथा स्त्रीत्व से श्रेष्ठ है) के निर्माण हेतु बहुत ही उपजाऊ भूमि प्रदान करती है लेकिन यह आक्रमकता देशभक्ति और राष्ट्रवादी मांगों की ओट में छिपाकर प्रस्तुत की जाती है।

पुरुषत्व या स्त्रीत्व की अभिव्यक्ति सामाजिक संदर्भों पर निर्भर करती है। उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि पाठ्यपुस्तकों में पुरुषत्व की प्रस्तुति अन्य सामाजिक ढांचों जैसे जाति, वर्ग, और धार्मिक पहचानों से बहुत गहराई से जुड़ी है। कहने का तात्पर्य है कि लैंगिक (जेंडर) पहचान समानांतर रूप से अन्य सामाजिक संदर्भों में अवस्थित होती है। अतः मेरा अध्ययन यह प्रदर्शित करता है कि यद्यपि पुरुषत्व का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है परन्तु इसका अध्ययन एक स्वायत्त विश्लेषणात्मक वर्ग की तरह से नहीं किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, हम देख ही चुके हैं कि कैसे निम्न जाति के पुरुषों का 'स्त्रीकरण' किया जा सकता है तथा ऊंची हैसियत वाली महिलाओं (जैसे झांसी की रानी को 'मर्दानी' संबोधन) का 'पौरुषीकरण' किया जा सकता है। अतः पुरुषत्व की संस्कृति का अध्ययन जाति, वर्ग, और धार्मिक पहचानों के साथ बदलती हुई पहचानों की प्रकृति का भी अध्ययन है। ◆

लेखिका परिचयः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के शिक्षा संकाय में एसोशिएट प्रोफेसर हैं।